12 विविधा

विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

राज्य वन्यप्राणी सलाहकार मंडल की बैठक सम्पन्न

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में दिनांक 5 दिसम्बर, 2017 को राज्य वन्यप्राणी सलाहकार बोर्ड की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बाघों और तेंदुओं की संख्या बढ़ाने के लिए दीर्घकालीन योजना बनाने पर विचार किया गया। बैठक में माननीय वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार भी उपस्थित थे।

लघु वनोपज के संग्रहण हेतु एमओयू का निष्पादन

न्यूनतम समर्थन मूल्य तथा लघु वन उत्पाद के लिए मूल्य श्रृंखला विकास के माध्यम से लघु वन उत्पाद के विपणन योजना हेतु प्रबंध निदेशक, ट्रायफेड, नई दिल्ली के साथ लघु वनोपज संघ द्वारा एक एमओयू निष्पादित किया गया है। योजना के अंतर्गत 75 प्रतिशत अंश की राशि भारत सरकार तथा 25 प्रतिशत अंश की राशि मध्य प्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा उपलब्ध करायी जायेगी। इस योजना के अंतर्गत अराष्ट्रीयकृत लघु वनोपज जैसे साल बीज, लाख (कुसुमी तथा रंगीनी), अचार गुठली, करंज बीज, हर्रा, शहद, कुल्लू गोंद, महुआ गुल्ली का न्यूनतम समर्थन मूल्य पर क्रय किया जा सकेगा।

तेंदूपत्ता संग्रहणकाल वर्ष 2016 के प्रोत्साहन पारिश्रमिक का भुगतान

राज्य शासन द्वारा तेंदूपत्ता संग्रहणकाल वर्ष 2016 का 207.68 करोड़ रुपये प्रोत्साहन पारिश्रमिक के रूप में वितरण करने की अनुमति प्रदान की गई है।

केन्द्रीय मंत्री द्वारा दीनदयाल वनांचल सेवा की सराहना

माननीय केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने दिनांक 15 दिसम्बर, 2017 को भोपाल में वन विभाग की गतिविधियों की समीक्षा की। उन्होंने दूरस्थ अंचलों में वन विभाग द्वारा संचालित दीनदयाल वनांचल सेवा के तहत किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

सहकारिता सप्ताह के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन

राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा सहकारिता सप्ताह के अवसर पर दिनांक 19 नवम्बर, 2017 को भोपाल में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में तेंदूपत्ता संग्राहकों तथा अन्य लघु वनोपज संग्रहणकर्ताओं के विकास और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए किये जा रहे प्रयासों पर चर्चा की गई। संगोष्ठी में लघु वनोपज संग्रहण समितियों के प्रतिनिधि तथा लघु वनोपज संघ के अधिकारी उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश की राज्य मछली नर्मदा महाशीर के कृत्रिम प्रजनन में सफलता

नर्मदा की निर्मलता की सूचक माने जाने वाली नर्मदा महाशीर मछली जिसे मध्यप्रदेश की राज्य मछली होने का गौरव प्राप्त है, जिसके संरक्षण में मध्यप्रदेश वन विभाग तथा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा 2 वर्ष पहले नर्मदा महाशीर के संरक्षण हेतु खरगौन जिले के बड़वाह वनमण्डल में एक परियोजना स्वीकृत की गयी थी। इस परियोजना के अंतर्गत कार्य करते हुए वनमण्डलाधिकारी, बड़वाह एवं उनके अधीनस्थ वनकर्मियों तथा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की महाशीर विशेषज्ञ डॉ. श्रीपर्णा सक्सेना एवं उनके शोध सहायकों की टीम द्वारा 2 वर्ष तक किये गये प्रयासों के बाद यह सफलता प्राप्त हुई है।

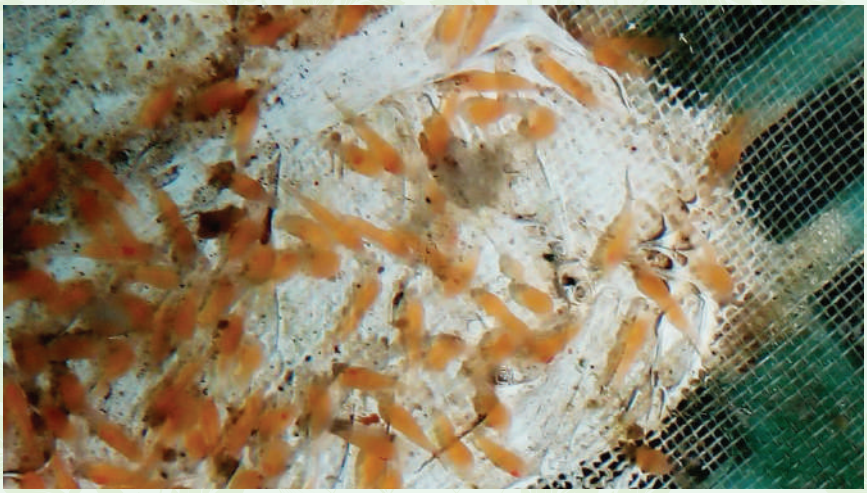

यद्यपि महाशीर मछली की कुछ अन्य प्रजातियों का कृत्रिम प्रजनन लोनावाला तथा भीमताल में पहले किया जा चुका है परन्तु नर्मदा महाशीर (टोर-टोर) के कृत्रिम प्रजनन में अब तक सफलता प्राप्त नहीं हो सकी थी। राज्य जैवविविधता बोर्ड एवं वन विभाग के संयुक्त प्रयास से चलाई जा रही इस परियोजना में परम्परागत तरीके से मत्स्य पालन की संरचना बनाने की बजाय प्राकृतिक नदी की तरह का वातावरण कृत्रिम रूप से निर्मित किया गया, जिसमें तालाब का धरातल कच्चा और पथरीला रखा गया तथा पानी का प्रवाह इस प्रकार संचालित किया गया जैसे प्राकृतिक रूप से बहती नदियों का रहता है। इसके साथ ही नर्मदा की सहायक चोरल नदी से पम्प करते हुए ताजा पानी महाशीर प्रजनन तालाब में डालते हुए वापस नदी में मुक्त किया गया।

इस तालाब में बड़वाह वनमण्डल के घने वनों से बहकर आते हुए निर्मल नदी नालों से एकत्रित किये गये महाशीर के 954 बच्चे पाले जा रहे थे, जिनके परिपक्व होने पर दिनांक 28.10.2017 को स्ट्रिपिंग की प्रक्रिया से अण्ड़ों के निषेचन से मत्स्य बीज व बच्चे प्राप्त करने में सफलता मिली है। इस परियोजना की देख-रेख में राज्य जैवविविधता बोर्ड के सदस्य श्री शशांक ओगले, मत्स्य विशेषज्ञ द्वारा निरंतर मार्गदर्शन दिया गया।

नर्मदा पर बने बांधों की नई श्रृंखला के कारण महाशीर के प्राकृतिक प्रजनन स्थल डूब जाने से इसकी संख्या में आ रही गिरावट राज्य सरकार की चिंता का विषय रहा है। इन परियोजना के सफल होने से न केवल नर्मदा व इसकी सहायक नदियों में नर्मदा महाशीर (टोर-टोर) के संरक्षण की नई उम्मीद पैदा हुई है बल्कि मान. मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश के संरक्षण में चलाए जा रही नर्मदा सेवा मिशन के अंतर्गत नर्मदा की शुद्धि के सूचक के रूप में महाशीर संवर्धन की संभावना विकसित हुई है। बड़े पैमाने पर इस प्रयोग को लागू करने की स्थिति में प्रदेश के लाखों मछुआरों के परिवारों को महाशीर की अंगुलिकाएं (छोटे बच्चे) पैदा कर मत्स्य पालन विभाग/संस्थाओं तथा निजी उद्यमियों को बेचने से नियमित तौर पर अच्छी आमदनी सुनिश्चित हो सकेगी।

5 वर्ष के बच्चे ने लिया अजगर (Python) को गोद

मास्टर विहान बघेल, जिनकी उम्र लगभग 5 वर्ष है, ने अजगर से लगाव होने के कारण इस छोटी सी उम्र में अपनी गुल्लक में जमा किये गए 8000 रूपये भुगतान कर वन विहार में एक अजगर (Python) को एक वर्ष के लिए गोद लिया। मास्टर विहान के पिता भोपाल शहर के निवासी हैं और वर्तमान में ये अमेरिका में नवादा स्टेट के रेनो शहर में रहते हैं। इन्हें स्कूल में इनके टीचर द्वारा सांपों के बारे में जानकारी दी गयी थी इसी दौरान ये अपने शहर में ही डिस्कवरी म्यूजियम घूमने गए वहां पर इन्हें सांपों को देखकर अजगर से लगाव उत्पन्न हुआ। इस संबंध में इनके पिता ने अपने वन अधिकारी मित्र श्री रजनीश सिंह से बच्चे के सांपों के प्रति हो रहे लगाव के संबंध में मोबाइल पर चर्चा की। श्री सिंह द्वारा उन्हें वन विहार में चल रही वन्यप्राणी अंगीकरण योजना की जानकारी दी। तब मास्टर विहान ने अपने गुल्लक में जमा किये गए पैसे अजगर को गोद लेने हेतु अपने पिता को दे दिये तथा अमेरिका में ही रहते हुए वन विहार भोपाल से एक अजगर को गोद ले लिया। संचालक वन विहार श्रीमती समीता राजोरा द्वारा इस बच्चे के वन्यप्राणी प्रेम को देखते हुए उसके द्वारा गोद लिए गए अजगर का नाम रखने हेतु कहा गया। मास्टर विहान द्वारा प्रोत्साहित होकर गोद लिए गए अजगर को ''टीटू'' नाम दिया गया।

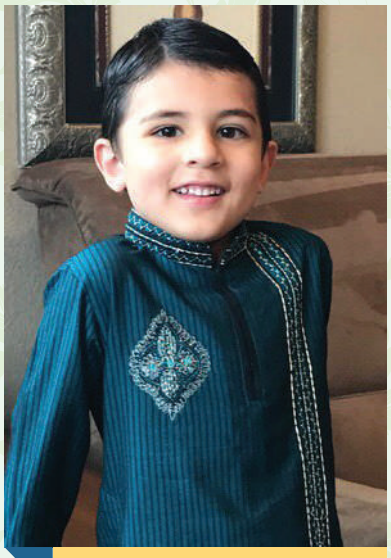

मास्टर विहान बघेल

अजगर 'टीटू'

Vulture Atlas of Madhya Pradesh

On 7th of October 2017 a book on Vulture Atlas of Madhya Pradesh was released at the closing ceremony of Wildlife Week Program at Van Vihar.

Release of Vulture Atlas of Madhya Pradesh

Vultures are an important part of ecosystem as they feed on carrion including discarded dead animals. India has nine species of vultures in wild but their distribution is not uniform in the subcontinent. They are known to inhabit tall trees in forests and smaller trees in open areas, rocky cliffs and old monuments. Knowledge of ecological factors in the habitat affecting large scale distribution and abundance of such endangered species is an important tool for defining management recommendations. Vultures using various habitats have declined from many parts of their former ranges owing mainly to food shortage, poisoned carcass and loss of habitat. This is negatively affecting the invaluable ecosystem services provided by them.

Madhya Pradesh is known to be a vulture stronghold of India but exact number of the raptor was not known couple of years ago. Keeping above in view, Vulture Atlas Project was conceived by Dr. K.K. Jha, IFS, Professor Indian Institute of Forest Management and realized with the support of Madhya Pradesh Forest Department and Madhya Pradesh State Biodiversity Board. Whole Madhya Pradesh was selected as the study site. It started with six workshops in different regions like Seoni, Jabalpur, Bhopal, Indore, Chhatarpur and Shivpuri. The objective was to train the trainers for future workshops in the circles. About 3000 trained persons worked in the field for vulture survey and counting. A preliminary survey was done in 2015 before the main counting to collect basic data. Two vulture counts were undertaken in winter and summer seasons. For both the counts a particular day (23/01/2016 and 14/05/2016) was fixed to avoid double counting in case of movement of vultures to another territory. All the adults and juveniles were counted. Roosting and nesting sites were recorded with the help of GPS system. Further, thematic maps showing species distribution and locations based on GPS readings were prepared using ArcGIS.

Finally, a Vulture Atlas of 166 maps was produced which contained district maps, protected area maps and agro-climatic region maps. After analysis of data collected during census, following important results came up from the study.

1. An average 7028 vultures (6268 adults and 761 juveniles) were recorded in two counts.Vulture presence was recorded at 832 sites in winter (6999 vultures) and 803 sites in summer (7057 vultures). Maximum number of active, inactive and abandoned nests were reported as 334,240 and 169 respectively.

2. Eighty seven percent of total vultures were recorded in forested area while only 13% were sighted in agriculture area. Vultures from forest area were distributed in major protected areas (45%) and non-protected areas (55%).

3. Seven different species of vultures (Long-billed vulture, Egyptian Vulture, White-rumped Vulture, Eurasian Griffon, Red-headed Vulture, Cinereous Vulture and Himalayan Griffon) were sighted throughout the state with average maximum numbers in Chhatarpur, Neemuch, Sheopur, Raisen and Panna. Three Agro climatic regions namely Gird zone, Vindhyan plateau and Malwa plateau inhabited the maximum average vulture population. Two Agro climatic regions Jhabua hills and Nimar valley were devoid of vultures.

4. On average abundance basis different vulture species were recorded in following decreasing order: Long-billed vulture (3351)> Egyptian Vulture (1874) > White-rumped Vulture (1522) > Eurasian Griffon (95) >Red-headed Vulture (93) > Cinereous Vulture (53) > Himalayan Griffon (42). Himalayan Griffon was not reported in summer from any part of the state.

5. Long-billed vultures and Egyptian vultures appeared to favor cliffs and agriculture fields for roosting and nesting. Some historical lofty monuments were also seen to be used for the same purpose. Other vulture species were mostly seen on trees.

6. About 26 different tree species (Peepal, Arjun, Salai, Sagaun, Asana etc.) were reported to be favored by vultures for roosting and nesting.

7. With reference to winter sighting, local movement of vultures was observed in summer. There was an indication that some vultures from southern part of the state relocated themselves in northern forest that too in protected areas.

Expert's comments on the Atlas:

1. PCCF and Chief Wildlife Warden, Madhya Pradesh, India, "a monumental work…first of its kind…authentic geospatial documentation of vultures for Madhya Pradesh…a useful clue for field managers for fine-tuning their conservation strategies."

2. Michael O Campbell, Vulture Expert (Simon Fraser University, BC, Canada), "this inclusive work will form a valuable reference for future conservation work in Madhya Pradesh and form a basis for understanding the wider issues of vultures in India, Asia and the world."

13 अखबारों के आइने से

भास्कर खास डिस्प्ले बाड़े में छोड़ने से पहले बाघिन के व्यवहार पर नजर रख रहा है वन विहार नेशनल पार्क प्रबंधन

बाघिन मटक्कली को 10 माह बाद मिला खास बाड़ा

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

इसलिए डर गई थी भीड़ से

नाराज हो गए थे रहवासी

बच्ची को उठा ले गई थी

नवभारत 05 DEC 2017

बाघों और तेंदुओं की संख्या बढ़ाएं

राज्य वन्य प्राणी बोर्ड की बैठक में मुख्यमंत्री चौहान ने कार्ययोजना बनाने के दिये निर्देश

भोपाल, 5 दिसम्बर. प्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत गैर-वानिकी कार्य के प्रकरणों से प्राप्त 5 प्रतिशत राशि टाईगर फाउंडेशन सोसायटी में जमा करायी जायेगी. इस राशि से वन एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण और संवर्धन के कार्य कराये जा सकेंगे.

बाघों को कूनो-पालपुर अभयारण्य में रखा जायेगा

क्लोज टू माई हार्ट कार्यक्रम से प्रदेश में जुड़े एक हजार लोग

बारहसिंगा ब्रीडिंग सेंटर का नए साल में होगा शुभारंभ

प्रदेश टुडे संवाददाता, भोपाल

लाइफ स्टाइल को बदलने पर फोकस

अब संजय दुबरी टाइगर रिजर्व का लुत्फ उठा सकेंगे सैलानी

ऑनलाइन बुकिंग लागू

इनका कहना है...

बाहर से आने वाले सैलानियों को बिना लुत्फ उठाए बैरंग न लौटना पड़े इसलिए 14 नवंबर से संजय दुबरी टाइगर रिजर्व में ऑनलाइन व्यवस्था शुरू की जा रही है।

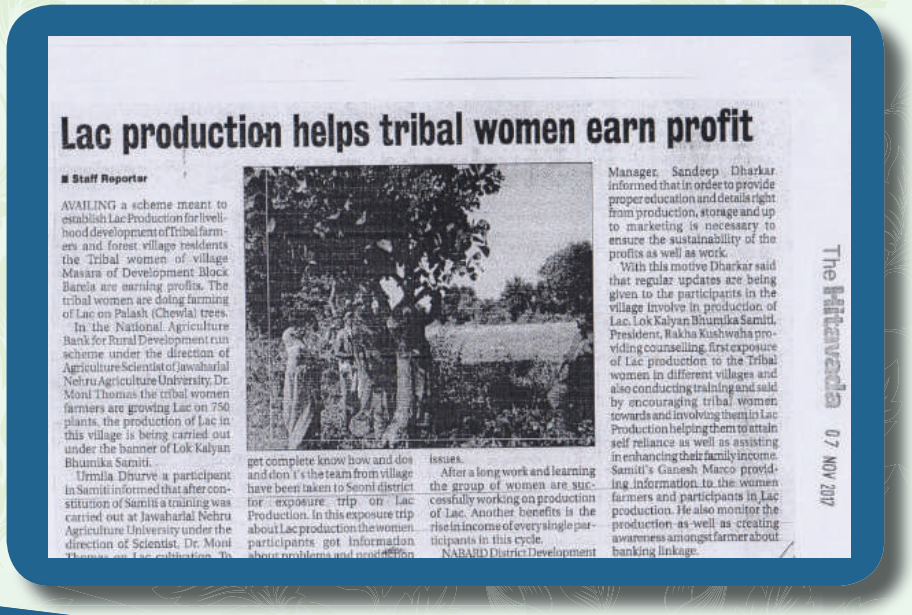

Lac production helps tribal women earn profit

The Hitavada 07 NOV 2017

■ Staff Reporter

AVAILING a scheme meant to establish Lac Production for livelihood development of Tribal farmers and forest village residents the Tribal women of village Masara of Development Block Barela are earning profits. The tribal women are doing farming of Lac on Palash (Chewla) trees.

In the National Agriculture Bank for Rural Development run scheme under the direction of Agriculture Scientist of Jawaharlal Nehru Agriculture University, Dr. Moni Thomas the tribal women farmers are growing Lac on 750 plants, the production of Lac in this village is being carried out under the banner of Lok Kalyan Bhumika Samiti.

Urmila Dhurve a participant in Samiti informed that after constitution of Samiti a training was carried out at Jawaharlal Nehru Agriculture University under the direction of Scientist, Dr. Moni Thomas on Lac cultivation. To get complete know how and dos and don't's the team from village have been taken to Seoni district for exposure trip on Lac Production. In this exposure trip about Lac production the women participants got information about problems and production issues.

After a long work and learning the group of women are successfully working on production of Lac. Another benefits is the rise in income of every single participants in this cycle.

NABARD District Development Manager, Sandeep Dharkar informed that in order to provide proper education and details right from production, storage and up to marketing is necessary to ensure the sustainability of the profits as well as work.

With this motive Dharkar said that regular updates are being given to the participants in the village involve in production of Lac. Lok Kalyan Bhumika Samiti, President, Rakha Kushwaha providing counselling, first exposure of Lac production to the Tribal women in different villages and also conducting training and said by encouraging tribal women towards and involving them in Lac Production helping them to attain self reliance as well as assisting in enhancing their family income. Samiti's Ganesh Marco providing information to the women farmers and participants in Lac production. He also monitor the production as well as creating awareness amongst farmer about banking linkage.

पीपुल्स समाचार 15 DEC 2017

केंद्रीय मंत्री ने किया सात दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वन मेले का शुभारंभ, देखे स्टॉल

अगर 100 साल तक रहना है स्वस्थ तो आयुर्वेद है जरूरी : डॉ. हर्षवर्धन

20 दिसंबर तक लगेगा मेला

एलोपैथी और आयुर्वेद हैं एक-दूसरे के पूरक

हरिभूमि 2 0 DEC 2017

वन मेले में लगभग एक करोड़ की बिकी दवाएं-उत्पाद

गुपचुप तैयारी गिर अभयारण्य के सिंह नहीं मिले तो वन विभाग ने बदल दी योजना, मांगी मंजूरी

कुनो में चिड़ियाघर के सिंह-शावक होंगे शिफ्ट

27 साल में नहीं हो पाई शिफ्टिंग

इसलिए पड़ी जरूरत

14 प्रशंसा एवं पारितोषिक

श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक को मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार

श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक/सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड को प्रशासनिक सेवा में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिए वर्ष 2014-15 का मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार (प्रथम स्थान) से नवाजा गया।

यह पुरस्कार श्रीमूर्ति को मध्यप्रदेश स्थापना दिवस 1 नवम्बर 2017 के अवसर पर मान. मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश श्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा प्रदान किया गया।

मान. मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश श्री शिवराज सिंह चौहान श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक/सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड को पुरस्कृत करते हुए

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति माह (अक्टूबर-दिसंबर, 2017)

श्री कल्लू सिंह अलावा, मुख्य वन संरक्षक

''प्रकृति आप पर छाप छोड़ती है,
आप अपनी छाप न छोड़ें।''

15 हरित साहित्य

माटी

जिसमें जन्मे, पले, बढ़े हो ।
जिसमें सन कर खेले और खिले हो ।
जो मुट्ठी भर भर खाते थे ।
फिर माँ से आंख चुराते थे ।
जो ओढन और विछावन थी ।
सुखमय थी मन भावन थी ।
जो झंकृत होकर उड़ी तुम्हारी ताल पर ।
जो बन कर तिलक सजी तुम्हारे भाल पर ।
वह मिट्टी याद दिलाती है ।
अपना अधिकार जताती है ।
क्या दिया तुमने उसके लिए ।
क्या किया तुमने उसके लिए ।
कुछ वृक्ष लगा कर उसका श्रृंगार करो ।
माटी का कर्ज चुका कर अपना उद्धार करो ।

आर.एन.दुबे
सेवा निवृत्त वन संरक्षक

दोहे तरुण के

चहचहाते जो पक्षी, कर उनसे संवाद।
हम भी ऐसे ही रहें , जैसे यह आज़ाद।।

हरियाली से बादलों, को मिलता आनंद।
होती जब बरसात तो, गर्मी होती मन्द।।

बंजर धरती हो अगर, होगा मित्रों नर्क।
जहाँ जीव खुश हैं नहीं, होगा बेड़ा गर्क।।

जन्म दिवस पर आप भी, पेड़ लगाएं एक।
हरी भरी धरती रहे, करो प्रदूषण ब्रेक।।

शहर न हो गन्दा कभी, रखना इसका ध्यान।
कूड़ा करकट डाल वहाँ, जहां नियत स्थान।।

मार कुलाँचे दौड़ते, देखो हिरण विचित्र।
विनय करूँ मैं आपसे, बनिये इनके मित्र।।

हो पवित्र पर्यावरण, हम जो चाहें यार।
वन्य प्राणी संरक्षण, करें सकल संसार।।

तिनका तिनका जोड़ के, बया महल तैयार।
जरा सीख इससे मनुज, श्रम चाहे संसार।।

देख बया का घोंसला, चकित हुआ इक बार।
अपने बच्चों के लिए, दिल में कितना प्यार।।

पीत वर्ण नन्हीं बया, ममता का भंडार।
उसके श्रम के पाठ से, सीखे सब संसार।।

पंकज शर्मा 'तरुण'
वन परिक्षेत्र अधिकारी
वन मण्डल शुजालपुर मध्यप्रदेश।

16 Ecotourism Destinations: Patalkot

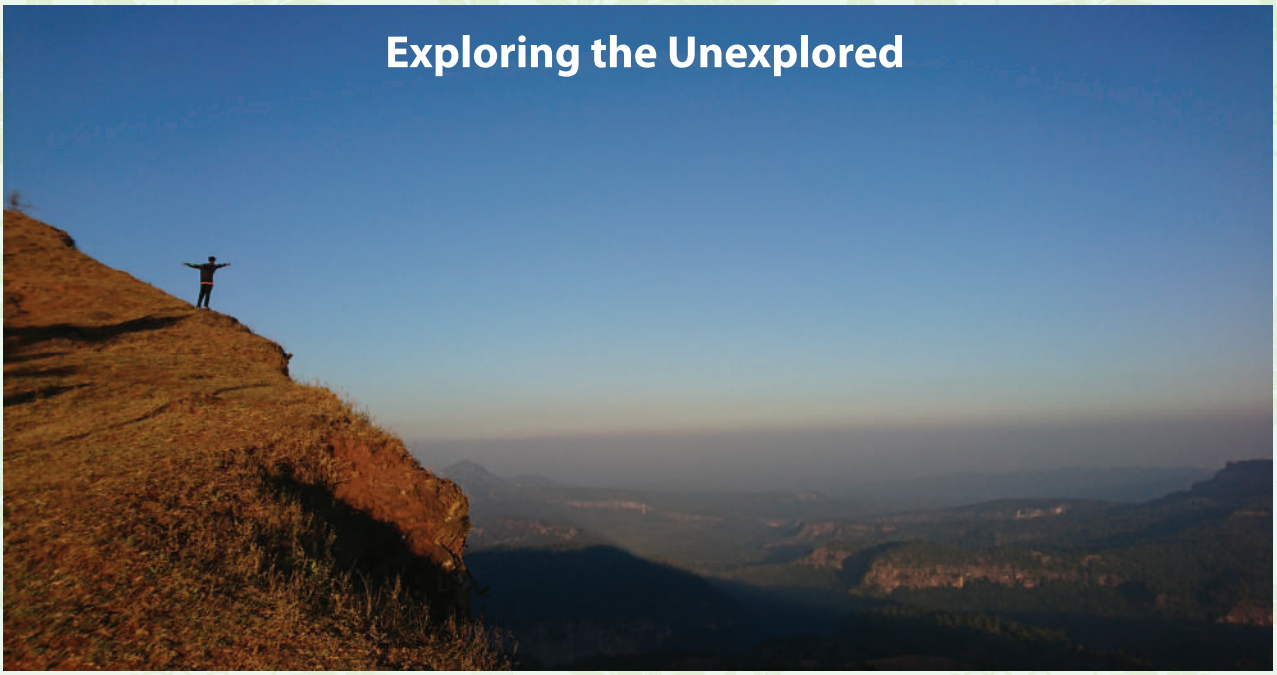

Exploring the Unexplored

Patalkot or the hidden world is a mystical valley located in Tamia block of Chhindwara district in Madhya Pradesh where you can witness mesmerizing landscapes and the little-known adivasi (tribal) culture. The enchanting village is located around 3,000 feet above mean sea level and is completely alien to the urbanized world. It is described often for its horse-shoe shape, the deep gorge that segregates the valley, and the scenic beauty canopied with the mighty Satpura mountain ranges and forests.

The mesmerizing landscapes and scenic beauty which is untouched by urbanization is something that makes this site unique. While visiting Patalkot, one can see wall paintings and slogans painted on the walls, along the way to the valley that highlights the importance of eco-system and conservation of nature. It is truly a good way to spread the awareness. The Madhya Pradesh Ecotourism Board provides an enriching experience to the tourists visiting Patalkot. Activities like trekking on natural trails, bird watching and landscape photography become the centre of attraction for the tourists. There is also the facility of camping at night in comfortable tents which tourists really enjoy.

Days of International Importance

February	2nd February World Wetlands Day
March	3rd March World Wildlife Day
	14th March International Day of Action for Rivers
	20th March World Sparrow Day
	21st March International Day of Forests
	21st March World Planting Day
	21st March World Wood Day
	22nd March World Water Day
	24th March Earth Hour
April	21st April World Fish Migration Day
	22nd April Earth Day
May	12th May World Migratory Bird Day
	19th May Endangered Species Day
	22nd May World Biodiversity Day
	23rd May World Turtle Day
June	5th June World Environment Day
	8th June World Oceans Day
	17th June Day To Combat Desertification and Drought

July	1st July Vanmahotsav Day
	11th July World Population Day
	28th July World Nature Conservation Day
	29th July International Tiger Day
August	12th August World Elephant Day
	22nd August National Honey Bee Day
September	16th September International Day For Preservation Of Ozone Layer
	18th September World Water Monitoring Day
	30th September World Rivers Day
October	1st-7th October World Wildlife Week
	5th October National Dolphin Conservation Day
	24th October International Day Of Climate Change
November	1st November World Ecology Day
	21st November World Fisheries Day
December	5th December World Soil Day

Patalkot , Madhya Pradesh

Wild Life Week 1st October- 7th October

Changeable Hawk Eagle
with a mongoose it has hunted

Bamboo Pit Viper
It is a poisonous snake that hunts mostly in night.

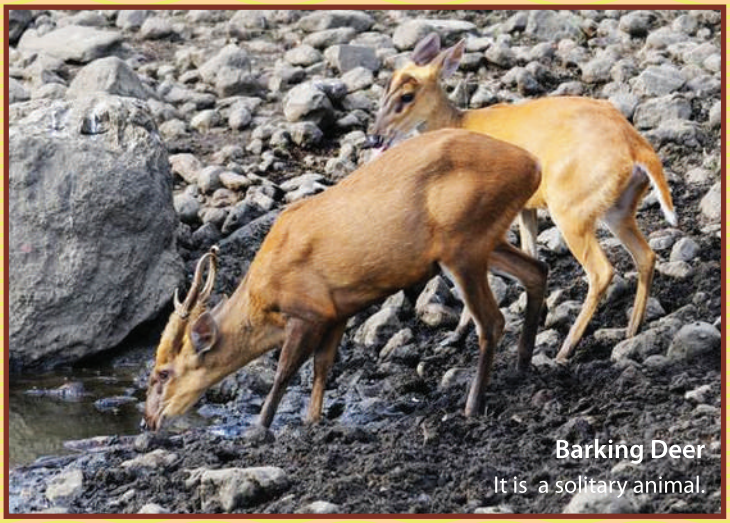

Barking Deer
It is a solitary animal.

Barn Owl
The species is threstened outside protected area

Honey Badger
It is an omnivore with very sharp teeth.

Madhya Pradesh Forest Department
Satpura Bhawan, Bhopal-462004
Website: www.mpforesr.gov.in